राष्ट्रीय संगोष्ठी

"एकात्म मानववाद अध्यात्मिकता का द्वार"

पूर्व प्रबन्धक स्वर्गीय ठा. अशोक कुमार सिंह को समर्पित

दर्शनशास्त्र - विभाग

तिलकधारी कालेज, जौनपुर

महोदय/महोदया

हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रायोजित "**एकात्म मानववाद अध्यात्मिकता का द्वार**" विषयक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (**दिनांक 24-25 सितम्बर , 2022**) को वी.बी.एस. पूर्वांचल वि.वि., जौनपुर से सम्बद्ध गौरवशाली उच्चतर शिक्षा संस्थान एवं उ.प्र. शासन से गुणात्मक उच्च शिक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त (सत्र 1997-98), तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर के दर्शनशास्त्र-विभाग एवं प्रायोजित संस्थान के संयुक्त तत्वावधान द्वारा आयोजित की जा रही है। विगत वर्षों से दर्शनशास्त्र-विभाग उच्च शिक्षा में गुणात्मक संवर्धन हेतु यू.जी.सी. के वित्तीय सहयोग से शोध परियोजना एवं विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठी समय-समय पर सम्पन्न कराता रहा है। तदवत् इस आयोजन में भी देश के लब्धप्रतिष्ठ दर्शनशास्त्री, साहित्य-मनीषी, समाज-वैज्ञानिक, शिक्षाविद् एवं विषय-विशेषज्ञों की जीवन्त प्रतिभागिता की सहमति प्राप्त है। **आप इसमें सादर आमंत्रित हैं।**

विचारणीय है कि वर्तमान व्यक्ति परिन्दों की भाँति आकाश में विचरण करना जानता है और उसे जलचरों की तरह जल में भी तैरने का बोध है, लेकिन वह मानवीय संवेदना से दूर होता जा रहा है। यथा दूरदर्शन पर सब कुछ दृश्य है, पर आपसी निकटता से ओझल है। अतएव मानवीय संवेदना के बीच विद्यमान द्वन्द्व के परिप्रेक्ष्य में यह संगोष्ठी अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। ध्यातव्य है कि प्रतिपाद्य संदर्भ दर्शनशास्त्र के अनुशीलन के साथ-साथ अन्तर्विषयता का भी बोधक है। मानव समाज सतत परिवर्तनशील है, लेकिन वह सर्वकल्याणकारी भी होना चाहिए, जिसमें प्रत्येक संवेदनशील मानव अपनी सक्रिय सहभागिता प्रदान करें और अन्योन्याश्रित सामञ्जस्य बनाये रखें।

श्रीमान् आपकी गरिमामयी उपस्थिति एवं सक्रिय सहभागिता इस संगोष्ठी को सार्थक बनाएगी। महाविद्यालय आपके स्वागत ओर सम्मान के लिए उत्सुक है।

महोदय, हम आपके विचारशील शोध-पत्र प्रतिपाद्य विषय अथवा उप विषय पर (हिन्दी अथवा अंगेजी में) लगभग 2000 शब्दों में सित0 22, 2022 तक डाक अथवा ई-मेल द्वारा शोध-पत्र सॉफ्ट कॉपी (कृतिदेव हिन्दी साइज 12 अथवा अंग्रेजी टाइम्स न्यू रोमन साइज 13) के साथ प्राप्ति होने की आशा करते हैं। संगोष्ठी के महत्वपूर्ण शोध-पत्र पुस्तक रूप में प्रकाशित होंगे।

सादर!

प्रधान संरक्षक

प्रो0 (डॉ0) एस.पी. सिंह
अध्यक्ष प्रबन्ध समिति

ठा. राघवेन्द्र प्रताप सिंह
प्रबन्धक

प्रो0 राम कुमार गुप्त
आयोजक

प्रो0 आलोक कुमार सिंह
प्राचार्य

सम्पर्क सूत्र : श्री चन्द्र प्रकाश गिरि, 7068319555

स्थान - बलरामपुर हाल, टी.डी.पी.जी. कालेज, जौनपुर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

" एकात्म मानववाद अध्यात्मिकता का द्वार "

(24-25 सितम्बर, 2022)

दर्शनशास्त्र - विभाग

तिलकधारी कालेज, जौनपुर

Prof. Ram Kumar Gupta
M.A., D.PHIL. (Allahabad University)
Department of Philosophy
T.D.P.G. College, Jaunpur
Member:
Indian Philosophical Congress
Akhil Bhartiya Darshan Parisad
Bharat Darshan Parisad
Ex. INCHARGE, U.G.C. - CELL, The T.D.C.

Residence:
Teachers Colony
T.D. College, Jaunpur
Mo.: 9451159043
Whats App: 8318553534
e-mail: gupta.ramkumar04@gmail.com

Date:.....

मान्यवर,

हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रायोजित **"एकात्म मानववाद अध्यात्मिकता का द्वार"** विषयक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (दिनांक 24 – 25 सितम्बर, 2022) को वी. बी. एस. पूर्वांचल वि. वि., जौनपुर से सम्बद्ध गौरवशाली उच्चतर शिक्षा संस्थान एवं उ0प्र0 शासन से गुणात्मक उच्च शिक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त (सत्र 1997–98), तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर के दर्शनशास्त्र–विभाग एवं प्रायोजित संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान द्वारा आयोजित की जा रही है। विगत वर्षो से दर्शनशास्त्र–विभाग उच्च शिक्षा में गुणात्मक संवर्धन हेतु यू. जी. सी. के वित्तीय सहयोग से शोध परियोजना एवं विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठी समय – समय पर सम्पन्न कराता रहा है। तदवत् इस आयोजन में भी देश के लब्धप्रतिष्ठ दर्शनशास्त्री, साहित्य–मनीषी, समाज–वैज्ञानिक, शिक्षाविद् एवं विषय–विशेषज्ञों की जीवन्त प्रतिभागिता की सहमति प्राप्त है। **आप इसमें सादर आमंत्रित हैं।**

विचारणीय है कि वर्तमान व्यक्ति परिन्दों की भाँति आकाश में विचरण करना जानता है और उसे जलचरों की तरह जल में भी तैरने का बोध है, लेकिन वह मानवीय संवेदना से दूर होता जा रहा है। यथा दूरदर्शन पर सब कुछ दृश्य है, पर आपसी निकटता से ओझल है। अतएव मानवीय संवेदना के बीच विद्यमान द्वन्द्व के परिप्रेक्ष्य में यह संगोष्ठी अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। ध्यातव्य है कि प्रतिपाद्य सन्दर्भ दर्शनशास्त्र के अनुशीलन के साथ–साथ अन्तर्विषयता का भी बोधक है। मानव समाज सतत परिवर्तनशील है, लेकिन वह सर्वकल्याणकारी भी होना चाहिए, जिसमें प्रत्येक संवेदनशील मानव अपनी सक्रिय सहभागिता प्रदान करें और अन्योन्याश्रित सामंजस्य बनाये रखें।

श्रीमान् आपकी गरिमामयी उपस्थिति एवं सक्रिय सहभागिता इस संगोष्ठी को सार्थक बनाएगी। महाविद्यालय आपके स्वागत और सम्मान के लिए उत्सुक है।

सादर!

भवदीय
प्रो0 आर के गुप्त,
आयोजक, संगोष्ठी।